25 Saturday January

हिन्दी भाषा का मानकीकरण

Important ✓

JANUARY-2003

M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
F	3	10	17	24	31
S	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

025-340 WEEK-04

8 a.m. मानक भाषा विकास प्रक्रिया का परिणाम होती है। विभिन्न स्तरों को पार करके बोली विभाषा का रूप ग्रहण करती है और विभाषा व्याकरण सम्मत और परिनिष्ठित रूप ग्रहण करके मानक भाषा बन

9 a.m. जाती है। क्षेत्रीय बोली से मानक भाषा तक की विकास प्रक्रिया इस प्रकार है —

10 a.m. उपेक्षित (गंवारू) बोली

↓

11 a.m. आशिक्षित, समाज के निम्नस्तर के व्यक्तियों के प्रयोग की बोली

↓

12 noon सामान्य जनों के बोलचाल की बोली

↓

1 p.m. शिष्ट वर्ग द्वारा स्वीकृत बोली

↓

2 p.m. साहित्य में प्रयुक्त भाषा

3 p.m. बोलने वालों की आर्थिक - राजनैतिक स्थिति और अपनी बोली के प्रति उनका

4 p.m. अनुराग. ही बोली को मानक भाषा के स्तर तक पहुंचाने में सहायक होते हैं।

5 p.m. मानक भाषा की विशेषताएं —

① Sunday 26

मानक भाषा का विकास अपने के न्द्रीय क्षेत्र में होता है। परन्तु क्षेत्रीय बोलियों में उसकी सुबोधता बनी रहती है। कभी-कभी तो मानक भाषा शिष्ट प्रयोग के नाम पर क्षेत्रीय बोलियों को अपने में इस प्रकार समेट लेती है कि उनका अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

मानक भाषा समाज के व्यवहार और गतिविधि का माध्यम बनती है। शिक्षा, प्रशासन, व्यापार तथा सभा-सम्मेलनों में मानक भाषा का बोलबाला रहता है।

Scanned with CamScanner

JANUARY-2003

M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
F	3	10	17	24	31
S	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

WEEK-05 027-338

Important Monday 27 January

8 a.m.

9 a.m.

10 a.m.

11 a.m.

12 noon

1 p.m.

2 p.m.

3 p.m.

4 p.m.

5 p.m.

③ मानक भाषा अपने प्रयोग से उत्तरोत्तर विकसित एवं समृद्ध होकर अपने क्षेत्र का अधिकाधिक विस्तार करती रहती है।

④ मानक भाषा क्षेत्रीय बोलियों से प्रभाव भी ग्रहण करती है।

⑤ मानक भाषा व्यवहार की भाषा से नहीं बोलियों के उच्चरित रूपों से भी भिन्न होती है वह व्याकरण के नियमों में बंधी होने से अपेक्षाकृत परिष्कृत तथा परिनिष्ठित रूप लिये होती है।

हिन्दी। मानक भाषा (उत्पत्ति)

① हिन्दी को यह नाम मुसलमानों का दिया है और इसका विकास मेरठ दिल्ली आगरा की बोली से हुआ है। इसे पहले हिन्दुई, हिन्दवी और फिर हिन्दी नाम दिया गया। इसी हिन्दी के "शुद्ध" रूप को "अयोध्या सिंह उपाध्याय" ने "ठेठ हिन्दी" कहकर भी पुकारा। अंग्रेजों के आने पर 'खड़ी-बोली' नाम दिया गया। यही हिन्दी ठेठ, खड़ी, शुद्ध और परिनिष्ठित रूपों विशेषणों को ग्रहण करती हुई आज 'मानक हिन्दी' बन गई है।

② आज यह मानक भाषा हिन्दी पश्चिमोत्तर भारत - पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, उत्तर प्रदेश तथा बिहार में शिक्षा, साहित्य, प्रशासन व्यापार तथा अन्य गतिविधियों का माध्यम बनी हुई है।

③ मानक हिन्दी अपने प्रयोग से विकसित होकर पूर्वी और दक्षिणी भारत में अपना विस्तार करने जा रही है। भारत सरकार अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनाने के लिए कृतसंकल्प है।

Scanned with CamScanner

(4) ~~मानक हिन्दी आज भी जहां अपनी~~ क्षेत्रीय बोलियों को ~~प्रभावित~~ शुद्ध भंडार दे रही है, वहां आवश्यकता पड़ने पर उनसे शब्द मुहावरे आदि ग्रहण करने में भी संकोच नहीं करती।

(5) मानक भाषा हिन्दी अपने क्षेत्र की बोलियों को प्रभावित कर ही रही है, स्वयं भी उच्चरित रूप के संदर्भ में प्रभावित हो रही है, परोक्ष और अलक्षित रूप से कुछ अंशों में लिखित रूप भी प्रभावित हो रहा है। इसी से तो समय आने पर एक नयी भाषा उभरेगी।

(6) हिन्दी का लिखित रूप इसके सामान्य व्यवहार के उच्चरित रूप से सर्वथा भिन्न है। उदाहरणार्थ - 'मैरे को' 'हम लेट हो गये' आदि प्रयोग चलते हैं परन्तु लिखने में भाषा के व्याकरण की दृष्टि से मान्य शुद्ध रूप को ही अपनाया जाता है।

हिन्दी की सामान्यतः 3 शैलियां है हिन्दी (संस्कृत निष्ठ), उर्दू (अरबी-फारसी निष्ठ) तथा हिन्दुस्तानी (ग्रामीण बोलियों का मिश्रित रूप)

डॉ॰ भोलानाथ तिवारी 3 के स्थान पर शैलियां मानते हैं (1) संस्कृत निष्ठ शुद्ध साहित्यि हिन्दी (2) बोलचाल की चलती हिन्दी (3) मिश्रित हि (4) उर्दू तथा (5) हिन्दुस्तानी।

मानक हिन्दी के उच्चरित रूप में इन शैलियों का मिश्रण देखने को मिलता है। इसमें अंग्रेजी, फारसी आदि भाषाओं के श का धड़ल्ले से प्रयोग होता है परन्तु लि मानक हिन्दी की एक सुनिश्चित एवं निर्विवाद शैली है जिसका प्रयोग साहि शिक्षा और प्रशासन आदि के कार्यों में

हिन्दी की मानक शैली

हिन्दी की मानक शैली की कुछ विशेषतायें निम्न है —

(1) इसके सभी स्वर मौखिक और अनुनासिक है यूं तो सभी स्वर मुख के विभिन्न भागों से बोले जाते है। परन्तु नासिक्य व्यंजनों — ङ, ञ, ण, न, म जुड़ने पर अनुनासिक हो जाते है।

(2) ए, ऐ, ओ, औ यद्यपि संयुक्त स्वर है (अ+इ=ए, अ+ए=ऐ, अ+उ=ओ, तथा अ+ओ=औ) पुनरपि इनका उच्चारण मूल स्वरों के रूप में होता है।

(3) ए, ऐ और ओ, औ का अनुनासिक रूप एक-एक ही है अर्थात् ए, ऐ में और ओ, औ के उच्चारण में भेद नहीं किया जाता।

(4) बलाघात अथवा आस-पास की ध्वनियों के प्रभाव से स्वरों के उच्चारण में द्रुतता, दीर्घ मात्रा आदि की दृष्टि से अंतर आ जाता है।

(5) कर्ता में ने का प्रयोग होता भी है और नहीं भी।

(6) सम्बन्धवाचक संज्ञा शब्दों के रूप में का, की, के का प्रयोग होता है।

(7) सम्बन्धवाचक सर्वनाम शब्दों के रूप में रा, रे, री का प्रयोग होता है।

(8) क्रियाओं के रूपों में बहुलता है।

(9) भूतकाल व भविष्यकालिक क्रिया रूपों में गा, गी, गे का प्रयोग किया जाता है।

(10) संज्ञा, विशेषण व क्रिया के रूपों में लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार परिवर्तन होता है।

(11) स, श ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण होता है। ... के उच्चारण में स्पष्टता ला...

Scanned with CamScanner

hursday प्रयास रहता है।

nuary Important

(12) म, न, ण उच्चारण अर्द्ध स्वरों के रूप में होता है

(13) तत्सम शब्दों के प्रयोग की प्रवृति अधिक है।

JANUARY-2003					
M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
F	3	10	17	24	31
S	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

030-335 WEEK-05

Scanned with CamScanner